हितनाथ झा

पिता	: प॰ तारानाथ झा
माता	: भागीरथी देवी
गाम	: कोइलख (पुबारि टोल) जिला : मधुबनी 847236
स्थायी निवास	: जयप्रभा नगर, 'सेलिब्रेशन'सँ पूब हजारीबाग, झारखंड, पिन-825301
जन्म	: 06 जून 1956
जीविका	: वरीय प्रबन्धक, इलाहाबाद बैंक (सेवानिवृत्त)
प्रकाशन	: कोइलख (ग्रामगाथा) : लेख-रेख (पोथी-प्रसंग) : कविता: शम्भु बादलक (अनुवाद) : त्रिवेणी (सम्पादन) : मैथिली इतिहासक रेखांकन (संग-सम्पादन)
सहभागिता	: साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक राष्ट्रीय सेमिनार, निखिल भारत बंग साहित्य सम्मेलन, मधुबनी लिटरेचर फेस्टिवल, मैथिली साहित्योत्सव, बड़ोदरा एवं अनेक मैथिली साहित्यिक संस्थाक सेमिनारमे आलेख-पाठ। पं॰ बबुआजी मिश्र मेमोरियल ट्रस्ट, कोइलख द्वारा सम्मानित।
सम्पर्क	: 9430743070
ई-मेल	: hitanathjha@gmail-com

मैत्रेयी प्रकाशन
बी-2187, गली नं . 45, कौशिक एन्क्लेव
बुराड़ी, दिल्ली-110084
ई-मेल : maitreyipublication@gmail.com

ISBN 978-81-973830-7-6

9 788197 383076

मूल्य : ₹ 100/-

राजापोता बलगर

हितनाथ झा

राजापोता बलगर

(बालकविता-संग्रह)

हितनाथ झा

राजापोता बलगर

(बालकविता-संग्रह)

हितनाथ झा

मैत्रेयी प्रकाशन , दिल्ली

राजापोता बलगर

(बालकविता-संग्रह)

कवि : **हितनाथ झा**
जयप्रभा नगर , हजारीबाग-825301 (झारखंड)
सम्पर्क : 9430743070
ईमेल : hitanathjha@gmail.com

ISBN : **978-81-973830-7-6**

प्रकाशक : **मैत्रेयी प्रकाशन , दिल्ली**
बी-2187 , गली नं. 45 , कौशिक एन्क्लेव
बुराड़ी , दिल्ली-110084
संपर्क: 9431693352
ईमेल: maitreyipublication@gmail.com

© : **हितनाथ झा**

प्रथम संस्करण : **2024**
मूल्य : **₹ 100**

आवरण चित्र : **श्रीमती ऋचा झा**

कला संपादन : **मणिशंकर कुमार**
संपर्क : 9312766899
ईमेल : kmanishankar@gmail.com

मुद्रक : **आर.के. ऑफसेट प्रोसेस**
नवीन शाहदरा , दिल्ली-32

Rajapota Balgar by Hitanath Jha
First Edition : 2024 , Price : ₹ 100

समर्पण

बौआ–बुच्ची अहींलोकनि छी देशक भावी रक्षक
पढ़ी-लिखी साकार करी ओ सपना विकसित राष्ट्रक।
विषय अनेको छैक , मुदा अहँ चुनी रुचिक अनुकूले
खेल–धूप व्यायाम सहित अनुशासन घर–इसकूले ।

चाचा नेहरू कयल जन्मदिन बौए लेल समर्पित ।
करी बाउ प्रतिभा-बलसँ से भारत माँकेँ अर्पित ।।

–हितनाथ झा

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना **7**

1. भोरे-भोरे 11
2. दादी पूजा-पाठ सिखौतौ 12
3. राजापोता बलगर 13
4. उड़नपरी चूमै आकाश 14
5. बौआदाइ 15
6. बौआदाइ ! बौआदाइ !! 17
7. कहलनि बौआदाइ 18
8. साइकिलक सबारी 19
9. मधुर 20
10. गाँती 21
11. योग 22
12. खेल 23
13. तिलासंक्रान्ति 24
14. मैडमजी-मिस-मैम रहै ने 25
15. सुपच खाउ भरिपेट 26
16. कत्ते बढ़ियाँ रहितहुँ गाम 27
17. डाकदर बैद बनल भगवान 28
18. नाक 29
19. आम 31
20. गर्मी छुट्टी गामे रहितहुँ 32
21. स्वादि-स्वादि ली मुँहमे टुपटुप 33

22. करब न बौआ आब ढिलाइ 34
23. कान 35
24. काजक बात 36
25. फहरत कीर्ति दिगन्त 37
26. पसरत ज्योति सकल संसार 38
27. झिझिरकोना 39
28. पर्यटन स्थल : झारखण्ड 40
29. मकान-घर 41
30. लोकतन्त्र 42
31. छुपल ओहिमे खेला 43
32. हिन्दुस्तानक प्राण तिरंगा 44
33. उर्वर धरती 45
34. भाग्यक रेखा 46
35. ऋतु-परिवर्तन 47
36. अइ जंगलमे 48
37. चुनि ली अप्पन 'रोल' 49
38. मिथिला हो सर्वोत्तम धाम 50
39. बृक्षारोपण 51
40. क्षणिका 52
41. दोहा 54
42. फुलबाड़ी 56
43. चन्द्रमाक नाम 57
44. कमलक नाम 58
45. जिनगीक लेल वरदान 59
46. लिखल मैथिली नीक लगइए 60

प्रस्तावना

मैथिलीमे पहिल बालपत्रिकाक प्रकाशन 1949मे भेलैक। 1949सँ 'शिशु' एवं 'बटुक'क प्रकाशन , 1957सँ 'धीयापूता'क प्रकाशन , 1996सँ नेना-भुटका , 1998सँ 'बाल मिथिला' आ आगाँ 'बालबन्धु' , 'बजरबट्टू' आदि पत्रिका अयलैक आ बन्द होइत गेलैक। आनो पत्रिकासभमे बालसाहित्य लेल अलगसँ स्तम्भ रहैत छलै , जाहिमे मिथिला मिहिर , वैदेही , कर्णामृत , मिथिला दर्शन आदि प्रमुख छल। एहि सभ पत्रिकामे मैथिलीक स्वनामधन्य साहित्यकारक रचना सेहो रहैत छलनि। बालसाहित्यकेँ समृद्ध करबामे सभ पत्रिकाक ऐतिहासिक महत्त्व छैक। मिथिला मिहिरक नेना-भुटकाक चौपाड़िमे हमरो , जखन हम स्कूलेमे पढ़ैत रही , 1971मे पहिल रचना छपल छल हितनाथ झा 'हितेश'क नामसँ। आगाँ किछु वर्ष धरि ई क्रम चलल आ लिखनाइ बन्द।

'कोरोना' कालमे जखन घरसँ बहरायब बन्द छल तँ सहारा छल पोथी आ मुखपोथिए (फेसबुक) टाक। उपर्युक्त बालपत्रिका आ अनेक बालकविताक पोथी पढ़बाक सुअवसर भेटल। ओहिमेसँ किछु कविता आ कविताक अंश मैथिली मचान (मैथिली फकरा , खिस्सा आ गप्प) पेजपर पठा दैत छलिऐक , जकरा ओहि पेजक 'एडमिन' श्रीमती सविता झाजी 'एप्रूभ' क' दैत छलथिन। ई क्रम पचाससँ बेसी दिन चललैक। स्वनामधन्य साहित्यकारक बालकविता फेसबुकक पाठक धरि पहुँचलैक।

एही क्रममे एक दिन भाइ सियाराम झा 'सरस'जीक फोन आयल , तीन-चारि स्वरचित बालकविता पठयबाक लेल। हुनका साहित्य अकादेमीसँ बालकविता संचयनक दायित्व देल गेल छलनि। हमरा मना कयलाक बादो मानलनि नहि , कहलनि पन्द्रह दिनक भीतर कविता पठाउ। अहाँक मिथिला मिहिरमे छपैत छल , से हमरा पढ़ल अछि। लिखलहुँ आ पठा देलियनि , तीन टा स्वीकृत भेल , से कहलनि।

संवैधानिक भाषा रहितो मैथिली प्रारम्भिक वर्गमे नहि पढ़ाओल जाइत अछि ,तैं अपन मातृभाषाक बालसाहित्यसँ मैथिल नेनालोकनि अपरिचिते जकाँ छथि। अभिभावक आ शिक्षक लोकनि एहि दिस ध्यान नहि द' अपन नेना आ विद्यार्थी लोकनिकेँ आने भाषाक पाठ पढ़बैत छथि से उचितो , मुदा हमरालोकनिक ई कर्तव्य अछि अपन मातृभाषाक प्रति नेनालोकनिक ध्यान आकर्षित करब ,जाहिसँ नेनालोकनि सरलता आ सहजतासँ अपन परिवार , समाज , गाम , शहर , नगर , महानगर , देश , देश-प्रेम , विधान-संविधान आ विदेशक विषयमे बुझि सकय। नेना लोकनि बुझि सकय अपन इतिहास , परम्परा , पावनि-तिहार , सम्बन्ध-बन्ध , अनुशासनक महत्त्व आ भविष्यक लक्ष्य। बालमनपर प्रभाव पड़बाक चाही ज्ञान-विज्ञान , कला-कौशल , जल-जंगल-पहाड़ , चिड़ै-चनमुन्नी , बाड़ी-झाड़ी-फुलबाड़ी , ऋतु , कलम-बगीचा , खेत-खरिहान , खेल-खेलौना , योग-व्यायाम , आवरण-पर्यावरण , पठन-पाठन , यश-अपयश आ सर्वोपरि सुनबा , पढ़बा आ गुनबाक अभिरुचि। ई सभ तखनहि सम्भव , जखन एहि सभ विषयक बालकविताक पोथी औतैक।

वर्तमानमे मैथिलीमे बालकविताक नीक-नीक पोथीसभ आबि रहल अछि , तखन हमर लिखल एहि पोथीक प्रासंगिकता की ? किन्तु एहि अवधिमे उपर्युक्त विषयक बालकवितासभ जे हम लिखी आ अधिकांश सोशल मीडियापर पोस्ट करी तँ सकारात्मक प्रतिक्रिया हमरा उत्साहित करय आ ई क्रम बढ़ैत गेल आ हमरासँ बालकविता लिखब छोड़ल नहि भेल। पत्र-पत्रिका-स्मारिकामे सेहो सम्पादक लोकनि छपलनि।भाइ उदयचन्द्र झा विनोदजीक आशीर्वाद भेटैत रहैत अछि। डा. शेफालिका वर्माक टिप्पणी एहि तरहेँ आयल-" बड्ड नीक कवितासभ। बाल मोन के मोहि लेत लीची खइतौं आमो ....आपसमे गप्प करैत ... एहि सभ कविताकेँ एहि तरहे पढाओल जाय जे नेना सभक हृदयमे सीधे उतरि जाय... काश...शिक्षा विभाग के मैथिली दिस ध्यान रहितय....।" श्री विभूति आनन्दजी यदाकदा फेसबुकपर लिखि दैत छलथिन-'बालकविता कहिया धरि आबि रहल अछि?' जहिया-जहिया श्री अजित आजादजी भेटैत छथि , कहैत छथि-'काकाजी ! आब बालकविता छपाउ।'

श्री उज्ज्वल कुमार झा (मैत्रेयी प्रकाशन)क सदाशयताक कारणे ई संग्रह अपनेलोकनिक समक्ष आबि सकल।

एहि संग्रहक बालकविताक विषयमे हम एतबे कहब जे एहिमे संकलित कवितासभमे किछु नेनाकेँ पढ़ि , ओकरा सुना कविताक प्रति उत्सुकता जगाओल जा सकैत अछि , किछु कविता प्राथमिक छात्र / छात्राक लेल अछि आ अधिकांश किशोर एवं तरुण विद्यार्थीक लेल लिखल गेल अछि , जाहिमे पूर्वमे कहल विविध विषयकेँ समावेश करबाक प्रयास कयलहुँ अछि।

मुदा हम अपन प्रयास तखने सार्थक बूझब जखन अभिभावक लोकनि मैथिली पोथी नेनालोकनि तक पहुँचाबथि आ मातृभाषामे लिखल कविताक महत्त्वकेँ बुझबितथि , वर्गमे पढ़ाइ नहियोँ होइत पोथी कीनथि , जाहिसँ नेनालोकनिकेँ बजबा , पढ़बा आ लिखबामे सामंजस्य बनल रहनि।

– **हितनाथ झा**

हजारीबाग

24.05.2024

भोरे-भोरे

भोरे-भोरे
नोरे-झोरे
कनलै जोरे
उठलै बौआ
भोरे-भोरे ...
भूखे-भूखे
दूधे-दूधे
मायक कोरे
पीबै बौआ
भोरे-भोरे ...
धीरे-धीरे
पूबे सीरे
भेल इजोरे
हँसलै बौआ
भोरे-भोरे ...
भरलै पेटे
गेँटक गेटै
देखि खेलौना
चढ़लै बौआ
टिकटिक घोड़े
टिकटिक घोड़े ...
भोरे-भोरे ...
भोरे-भोरे ...

दादी पूजा-पाठ सिखौतौ

दादी पूजा-पाठ सिखौतौ
दादा कहतौ कविता गढ़
पापा तखने दौड़ल औतौ
मम्मी कहतौ पोथी पढ़।

नानी निनियाँ गाबि सुनौतौ
घोड़ा नानाक पीठ सवार
मामा आनि खेलौना देतौ
मामी करतौ आर दुलार।

काका-काकी , मौसा-मौसी
पीसी करतौ विडियो कॉल
पढ़बेँ-लिखबेँ , खूब खेलयबेँ
तखने घुमबेँ दिल्ली मॉल।

राजापोता बलगर

दादा पीठ सवार आइ छै राजापोता बलगर
कहै , चलू बाजार किनै ले' जत' खेलौना बड़-बड़

हरियर–पीयर–लाल–बैगनी , सुन्दर– सुन्दर
सभ टा लेबै , किछु नै छोड़बै , हड़बड़–हड़बड़

कोनो बजतै , कोनो चुप्पे , कोनो चलिते रहतै
मोटर गाड़ी सौंसे अङना भरिदिन घुमिते रहतै

छुक्-छुक् करतै रेलो-गाड़ी , पटरीपर दौड़यबै
तहिना हवा-जहाजो हम सौंसे आकास उड़यबै

सूगा-मैना-पड़बा-बगड़ा उड़ि-उड़ि जेतै-औतै
कौआ करतै काउँ-काउँ आ कोइली गीतो गौतै

भरि दिन रहबै बीच खेलौना , हमरा क्यो ने टोकत
मम्मी-पापा डाँटत तखने दादा ओकरा रोकत ।

उड़नपरी चूमै आकाश

मन गद्‌गद् साइकिलपर घूमै
उड़नपरी चूमै आकाश
ट्रिं-ट्रिं घंटी बजा-बजा क'
मस्तीमे ओ झूमै खास।

घुमा रहल हैंडिलकेँ हरबर
छनमे एमहर , छनमे ओमहर
अपनो नहि ओ बूझि रहल छै
जा रहलैए साइकिल कोमहर।

कतबो चलबै , थकै ने तैयो
बजबै क्यो तँ दरबर भागै
भूख–पिआसहुँकेँ बिसरै आ
ककरहु हाथ कहाँ ओ लागै।

पापा डाँटि देथिन तँ बाबी
कोरामे लय पोल्हबै-बुलबै
कखनो संच-मंच भय बैसल
पोथी पढ़ि मम्मीकेँ सुनबै।

बौआदाइ

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
भोरे–भोरे ई उठि जाइ ।।

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
बाथरूममे रोज नहाइ ।।

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
बिनु पूजा कैने नै खाइ ।।

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
बैसय पढ़य संगमे भाइ ।।

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
होमवर्क क' इसकुल जाइ।।

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
बस्तामे टीफिन ल' जाइ ।।

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
मनसँ सभ घंटी पढ़नाइ ।।

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
खेलोमे सेसर एनाइ ।।

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
गुरुक बातपर ध्यान देनाइ ॥

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
बेरहटमे फल मधुरो खाइ ॥

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
संगी संगे खूब खेलाइ ॥

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
साँझक पहिने घर घुरनाइ ॥

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
हाथ-पैर धो क' पढ़नाइ ॥

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
दूध संग नित रोटी खाइ ॥

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
मम्मी–पापा सङ सुतनाइ ॥
बौआदाइ ! बौआदाइ !!

बौआदाइ ! बौआदाइ !!

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
की सभ खाइ ? की सभ खाइ ??
फल-फलह'री-द'ही–चूड़ा–चीनी-मधुर-मिठाइ
भात-दालि-तरकारी-रोटी सङमे दूध-मलाइ।

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
की पढ़नाइ ? की लिखनाइ ??
गणित भूगोल इतिहास अङरेजी विज्ञानो पढ़नाइ
अपन मैथिली माइक भाषा , मिथिलाक्षर लिखनाइ।

बौआदाइ ? बौआदाइ ??
की गेनाइ ? की सिखनाइ ??

मिथिला-पेंटिंग , लिखिया-पढ़िया , देवीगीत गेनाइ
पूजा-पाठ कोन विधि करिऐ दादीसँ सिखनाइ।

बौआदाइ ! बौआदाइ !!
की खेलनाइ ? की खेलनाइ ??
करिया–झुम्मरि , अटकन-मटकन खूब खेलेबै आइ
चेत-कबड्डी-लूडो-कैरम संग खेलेतै भाइ।

कहलनि बौआदाइ

उठितहि कहलनि बौआदाइ
हमसभ जेबइ चानपर आइ
ओत्तइ पढ़बै ओत्तइ लिखबै
खेलो ओत्तइ खूब खेलेबै ।

गामो-शहर बसेबै ओत्तइ
गाछो खूब लगेबै ओत्तइ
मौसम ओत' हेतै अनुकूल
मैडमजी खोलथिन इसकूल ।

चन्ना मामा आब ने दूर
सभक मनोरथ हेतनि पूर
राति अन्हरिया ओत' ने हेतै
चकमक चन्ना खूब सोहेतै ।

(चन्द्रयान 03क सफलतापर)

साइकिलक सबारी

बेर-बेर चक्कर हम काटी
चारू दिस मैदानमे
ट्रिंग-ट्रिंग घण्टी खूब बजाबी
'लेन' रहय सभ ध्यानमे।

दादा टहलथि भोरे-भोरे
संगे दादी नहुएँ-नहुएँ
जे भेटनि से करनि प्रणामे
कुशल पुछनि सम्मानमे।

हवा ब्रेक दुनू पहियाकेँ
रहने पैडल जोर घुमाबी
आगाँ क्यो धोखोसँ आबय
ब्रेक दबाबी जोरमे।

जितब रेस संगी-साथीसँ
जिला-राज्य हम देशमे
मम्मी-पापा खूब सिखाबथि
ध्यान देब अभ्यासमे।

मधुर

चन्द्रकला आ लड्डू , पेड़ा
आर अमिरिती-रसमलाइ
गरम जिलेबी फेँटि राबड़ी
भाइ-बहिन मिलि खेबै आइ।

खाजा–मुङबा-बालूशाही
काजू-बरफी आ चमचम
कलाकन्द आ राजभोग सङ
रसगुल्लो टपटप हरदम।

हमहूँ पढ़बै हमहूँ लिखबै
हमहूँ किनबै बहुत मिठाइ
हाकिम बनि अयबै घर जखने
मम्मी-पापा करत बड़ाइ।

गाँती

जाड़ेँ सर्द बिलाड़ि , हाड़ बड़ काँपय लगलै ,
राति बितायत कोना , सुन्न माथा भ’ रहलै ।
सुटकल छल धऽ कोन , गेल भ’ चुक्कीमाली
पड़ल अवग्रह प्राण , प्रतीक्षा सूर्यक लाली ।।

खट-खट करइत दाँत , नाकमे भरलै पोटा ,
थरथराइ बड़ देह , सुझै ने बाट कोनो टा ।
अही जाड़ ले’ लिखने छथि बाबा ई पाँती
बौआ ! भागत जाड़ , बान्हि कऽ देखू गाँती ।।

योग

जहिना अंकगणितमे योग
स्वास्थ्यो ले' तहिना थिक योग
जहिना अक्षरमे भगवान
तहिना योगक तोड़ न आन ।

योग करी नित दूनू बेर
योगक अनुशासन अछि ढेर
ओइमे जे अछि परम जरूरी
हो अनुपालन बिनु मजबूरी ।

खेल-कूद सङ पढ़ब जरूरी
स्वस्थ रहक अछि पूरा–पूरी
तन–मन सबल करत योगे टा
बाउ ! न कहियो बिसरी से टा ।

खेल

चेत-कबड्डी-वॉलीवॉल
टेनिस क्रिकेट आ फुटबॉल
चोरा-नुक्की अटकन-मटकन
कुस्तीमे दी सभकेँ पटकन ।

खो–खो लूडो संगहि कैरम
सीढ़ी सापक खेल मनोरम
गुल्ली-डण्डा , तीरंदाजी
सभ निशान पर , नइँ अन्दाजी ।

सब खेलक अछि अपन महत्ता
सबल करय बढ़बय गुणवत्ता
'टीम'क गठन मनन केर बादे
तखनहिँ भेटय जीतक स्वादे ।

तिलासंक्रान्ति

आइ मकर– संक्रान्तिक पावनि , भोरे-भोर नहेबै ।
माँ-बाबूजी , काकी-काका , सभ मिलि तिलबा खेबै ।।

पहिने दादी पूजा करतै , गूड़-चाउर सङ तील चढ़ेतै ।
बच्चा सभकेँ बजा खुएतै , ठोकि माथ आशीषो देतै ।।

कहतै तिल-तिल बहिहेँ सभ दिन , रखिहेँ हम्मर मान ।
पढ़िहेँ–लिखिहेँ , ढेर कमइहेँ , पबिहेँ खुब सम्मान ।।

पैर छूबि दादीकेँ कहबै , करबा ले' विश्वास ।
खिच्चड़ि , भटबड़ , घी आ दहियो खुआ आइ जे खास ।।

मैडमजी-मिस-मैम रहै ने

माँटिक भट्ठा अङना नीपल
अ आ इ ई ओइपर लीखल
तकर बाद लकड़ी केर पाटी
सङ बैसय आरो सहपाठी।

भेटल सिलेटो कॉपी सेहो
पतरखड़ी कठपेन्सिल जे हो
लीखि मेटाबी पुनि–पुनि लीखी
चलय एना क्रम जा नहि सीखी।

कहल जाय भेटत कलमो तँ
हैत लिखल मोती सन अक्षर
लिखू एखन करचिए कलमसँ
फॉउंटेनपेनसँ लिखब सत्वर।

युग मोबाइलक छलै ने तहिया
इंटरनेटक पता छलै ने !
हाथ पकड़ि क' गुरुजी सिखबथि
मैडमजी–मिस-मैम रहै ने।

सुपच खाउ भरिपेट

राखल सामिष आर निरामिष
अपना मनसँ चुनियौ
रुचिसँ पाबि झुमैत मस्त भ’
आगाँ डेग बढ़बियौ।

आँकड़-पाथर थेथर सन
छन-छन मुड़ियारी देत
थुकड़ि मूँहसँ फेकू ओकरा
सुपच खाउ भरिपेट।

कत्ते बढ़ियाँ रहितहुँ गाम

कत्ते बढ़ियाँ रहितहुँ गाम
खैतहुँ लीची आम लताम
झुलितहुँ मचकीपर समतूल
ओत्तइ पढ़ितहुँ जा इसकूल।

कत्ते बढ़ियाँ रहितहुँ गाम
दशमीमे घुमितहुँ सभठाम
खैतहुँ झिल्ली-मुरही-लाइ
किनतहुँ बैलुन और मिठाइ।

कत्ते बढ़ियाँ रहितहुँ गाम
धान-मखानक फसिल ललाम
गमगम चूड़ा , भेली गूड़
रिन्हिकापर झपटै सभ तूर।

कत्ते बढ़ियाँ रहितहुँ गाम
सभकेँ करितहुँ रोज प्रणाम
पढ़बोमे लगितय बड़ मोन
दोस-महीमक कम्मी कोन ?

कत्ते बढ़ियाँ रहितहुँ गाम
खेलक संग होइत व्यायाम
खन घर–आङन , खनहि दलान
सभदिन जैतहुँ देवीथान।
कत्ते बढ़ियाँ रहितहुँ गाम ।।

डाकदर बैद बनल भगवान

डाकदर बैद बनल भगवान
देथि दुखितकेँ जीवन दान
केहनो रहौ समय विकराल
पहुँचि जाइ छथि ओ तत्काल।

रोग–व्याधिसँ बढ़ै बिकलता
समुचित काज करै नहि अंग
ता उपचार करथि जा पूरा
भय न जाय ओ ठीक अलंग।

दिनमे चैन न निन्न रातिमे
बस , रोगिक चिन्तेमे लीन
कतबो क्यो छथि धनी-कलामी
सभ लचार छथि हिनका बीन ।।

नाक

नाक पकड़ि कहलनि बाबाकेँ
एकर कोन छै काज
पैघ अहाँकेँ , छोट हमर अछि
कहू एकर की राज ?

आँखिक नीचाँ, मूँहक ऊपर
दुनू कात छै कान
भीतर - बाहर हवा छोड़ै छै
जिनगी ले' वरदान।

जहिना पानि छानि कs पीबै
हवा छनै अछि नाक
लै' ऑक्सीजन छोड़ै कार्बन
नाक बँटल दू फाँक।

वस्तुक गन्धक यैह पारखी
घ्राणशक्ति एकरामे
ककरा राखी ककरा छाँटी
राखी गुण जकरामे।

स्वस्थ रही तेँ साफ करी नित
नाकक बीचक पोटा
ध्यान रहय आडु•र ने ढूकय
बीच नाक कनियोँ टा।

थीक प्रतीक नाक सम्मानक ,
इज्जति करै समाज
पैघ हैब आ पढ़ब - लिखब तँ
बुझबै एक्कर राज॥

आम

मजरल आम सुवासित परिसर
टिकुला होइते चटनी मजगर
बनत अचार गुरम्बा संगहि
गोपी मन ललचायत जहिँ-तहिँ।

रही शहरमे अथवा गाम
पालक गमगम पाकल आम
कतरा काटब , सौँसे सेहो
मारि चभक्का खायब जेहो।

कृष्णभोग-बम्बइ-कलकतिया
मालदहो-रसभोग-सिनुरिया
कलमबाग गाछी मे मचकी
झुलबो करबै मिलि सङतुरिया।

आम कहाबय राजा फलमे
जहिना माँछ कहाबय जलमे
किन्तु माँछ भेटैछ साल भरि
आमक हिस्सा तीन मास धरि।

गर्मी छुट्टी गामे रहितहुँ

लीची खइतहुँ , आमो खइतहुँ
कारी-कारी जामुन बिछितहुँ
भोर-साँझ गाछीमे रहितहुँ
झूला झूलि मचाने सुतितहुँ ।

संगी-साथी नव-नव तकितहुँ
रंग-विरंगक गप्प चिबबितहुँ
डबड़ा-पोखरि बाध रजोखरि
गामक खेत-पथारो देखितहुँ ।

भेटथि बाबा-बाबी बहुतो
सभ अङनामे , कहितथि अबिहेँ
हमर सोन सन बौआ छेँ रे
अपन गामकेँ तोँ ने बिसरिहेँ ।

स्वादि-स्वादि ली मुँहमे टुपटुप

आब कहाँ ओ 'सुरसर'वाली ?
गामक गाम भेटत सब खाली
झिल्ली-मुरही-कचरी-लाइ
धानक बदला कीनी जाइ।

गरम-गरम कुड़कुड़ , कागजमे
दैक लपेटि चटनियोँ सङमे
देखितहि संगी धरय पछोड़
करितहुँ की मन होइतो घोर।

कोनो कोनमे बैसल चुपचुप
स्वादि-स्वादि ली मुँहमे टुपटुप
अगहन अबिते मनक उछाह
हमरा सभ सङ मूसो शाह।

कटनी–दौनी-कुटनी-पिसनी
होइछ आइयो , किन्तु मशीनी
ने ओ देवी आ ने कड़ाह
अगहन एखनो , मनमे आह...!

करब न बौआ आब ढिलाइ

आबि गेल ई फेरो हुलकल ,
जा बैसल छल कोनटा दुबकल।
काल कोरोना डसि लेने छल ,
सभकेँ जीवन हरि लेने छल।

घूमि रहल अछि अगले बगले ,
चूक हैत सटि जायत लगले।
करब न बौआ आब ढिलाइ ,
मास्क पहिरि इसकूलो जाइ ॥

पढ़ब-लिखब अछि बहुत जरूरी ,
सटब कतौ ने राखब दूरी।
राखब ध्यान संयमे जीवन ,
लसरि-ससरि नै छूबय पुनि तन ॥

कान

जहाँ कने अनठबिऐ , पढ़ि नहि पबिऐ ,
ऐंठल जाइत छलय ई कान।
जहाँ कने नहि बुझिऐ , मन भटकबिऐ ,
पदवी भेटय ई बड़ अकान ।।
सत्त कहै छी , होइ छल तहिया , भूरेटासँ
काज चलौने रहितथि श्री भगवान।
कोन जरूरी छल दू भागक , लाल कान
कय भेटय नित अपमान ।।

चालिस धक होइतहिँ बुझलहुँ जे आँखिक
ज्योति बढ़यबाकेर ई टेक।
काल कोरोना अबितहिँ देखलहुँ ,नाक-मूँह
झपबाकेर ई थिक यंत्र विशेख ।।
कान न होइतै ,कोना लगबितहुँ , ठोकल
जइतै तँ बड़की टा कील।
लाल कानकेर डरसँ पढ़लहुँ , मास्क लगयबामे
एखनहुँ तैं करी न कनियो ढील ।।

काजक बात

फेकन बाबू पढ़ि नहि सकला
फेकूजी फेकितहिँ रहि गेला
फेकन पढ़ि-लिखि सुयश प्रतिष्ठा
पौलनि , बड़का हाकिम बनला।
बौआ ! ध्यान दियौ ई बात
पढ़नहि-लिखनहि भेटत भात।

मुनियाँ भ' गेल मुनमुन मेम
कला-जगत मे अद्भुत देन
नेनेसँ लिखिया सिखि सभ दिन
ताही टा सँ रखलक प्रेम।
बौआ ! बुझू अहाँ ई बात
बिनु त्यागे नहि होयब ख्यात।

हरिया तइ दिन खेल-धूप मे
भिड़ल रहै छल अपन 'ग्रूप' मे
ध्यान मात्र ओलंपिक विजयक
अनलक स्वर्णपदक ओ चकमक।
हैब सफल जौँ आलस कात
गीरह बान्हि लिय' ई बात।

बालचन्द जी दम्म साधि क'
अनुशासित व्यवसाय ठानि क'
जेँ कि अपन व्यापार बढ़ौलनि
तेँ ने सेठ जी आइ कहौलनि
आलस-मद केँ करू निपात
मन राखी ई काजक बात।

फहरत कीर्ति दिगन्त

खाय-खेलाय खूब आ मनसँ
तहिना रगड़ि पढ़ैछ
रहि विनम्र गुरुजन लग नत जे
से बटु शीर्ष चढ़ैछ।

घड़िक सूइ सन जे अनुशासित
ओ टा लक्ष्य पबैछ
ज्ञानक अन्त होइछ नहि कखनो
पढ़नहि भूख बढ़ैछ।

रुचि अनुकूल विषय धरि चूनू
पहुँचू लक्ष्यक अन्त
घर–परिवार–समाज-देशमे
फहरत कीर्ति दिगन्त।

पसरत ज्योति सकल संसार

ठेस बिना क्यो बढ़ि नहि सकलै
बढ़लै तँ इतिहास पलटलै
ठेसक डरसँ जँ नहि बढ़बै
कछुए सन घुसकुनियाँ कटबै।

ठेसक चिन्ता जे करैत अछि
कूप-मण्डुके से रहैत अछि
लगने ठेस बढ़ै छै बुद्धि
सभकेँ ईश्वर देथि सुबुद्धि।

रहब सत्यकेँ गहि कय धयने
केहनो संकटसँ बिनु डरने
दूर हैत अपनहि सभ कंटक
झटपट बढ़ल चलब निष्कंटक।

सुखद भोर हो तँ दिन सुन्दर
बुन्न-बुन्नसँ भरय समुन्दर
विद्या-अर्जन हरत अन्हार
पसरत ज्योति सकल संसार।

झिझिरकोना

पूबक पथ यदि धरब ,
हैत मन पश्चिम बढ़ितहुँ ?
पश्चिम दिस जँ जैब ,
कहत मन दक्षिण जइतहुँ ?

उत्तर-दक्षिण-पूबे-पश्चिम ,
घुमिते रहबै सभ कोना ।
बिनु लक्ष्ये यदि चलबै अहिना ,
रहब खेलैत झिझिरकोना ।।

लक्ष्य एक निर्धारित क' क'
बढ़बै , तखन शिखर चढ़बैक ।
स्वयं उठत निज पैर तही दिस
मनकेँ जखन गाढ़ करबैक ।।

बाधा फुर्र उड़त क्षणमे आ
मनमे हैत सुदृढ़ संकल्प ।
देखू देशक वैज्ञानिक मिलि
चढ़ल चन्द्र आ खर्चो अल्प ।।

पर्यटन स्थल : झारखण्ड

'नेतरहाट'-'तिलैया'-'गुमला'
बाग-हजार 'हजारीबाग'
'मारोमार'-'लोधा' 'बेतला'मे
'दलमा' घूमी बारम्बार।

प्रकृति खान आ गान मनोहर
चित्रकला सेहो 'सोहराइ'
वन-आच्छादित झारखण्डमे
नृत्य आदिवासीक सोहाइ।

दिव्य–मनोहर अछि मनभावन
जंगल सभदिस हरियर–हरियर
नदी पहाड़ स-जल अछि सगरो
झारखण्ड अछि खूब रमनगर।

सिद्धपीठ आ शक्तिपीठ सङ
ज्योतिर्लिंगक दर्शन पाउ
मन हर्षित आ तन पुलकित हित
झारखण्डमे घूमय आउ।

मकान-घर

लकड़ी-लोहा-छड़-सिमेंट आ बालु आदि सामान ।
यदपि थीक निर्जीव , संग मिलि दैछ बनाय मकान ।।

रंग-विरंगक , छोट-पैघ , बरु हो सुंदर प्रासाद ।
किन्तु न 'घर' ओ बनि सकैछ , जँ अपनामे अवसाद ।।

आपसमे अवसाद , तखन प्रसादो लगै अरुचिकर ।
समरस रहने कष्टो सहने , टुटलो घर हो रुचिकर ।।

(प्रासाद ~राजभवन , अट्टालिका)

लोकतन्त्र

लोकतन्त्र केर जड़ि गहीरँ अछि पसरल-पसरल
रंग-विरंगक फूल सदृश अछि लतरल-चतरल
बिज्जू आमक स्वाद सनक अछि भाषा-बोली
किछु मिठगर किछु खटगर किछु अछि दूनुक टोली ।

अछि विशाल बटवृक्ष जकाँ ई हम्मर अपन विधान
ओकरहि छायासँ शीतलता भेटि रहल वरदान
भेद-भाव नहि करइछ कनियोँ हो अमीर वा दीन
अन्हड़-पाथर आ बरखोसँ बचबै अछि सभदीन ।

बीच-बीचमे उगि वन-झाँखुर चुभन रहैए दैत
रक्षक भक्षक बनि जाइत अछि जनता रहय घुटैत
किन्तु न्याय नहि डगमग होइछ , जनते असली मालिक
पाँच सालमे बदलि सकै अछि , भोट दैत अछि बालिग।

छुपल ओहिमे खेला

कबकब ओलो स्वादि खाइ हम
तीत अकत्त करैला
नीमक टुस्सी घोरि पिबी हम
रोग–विपत्ति पड़ैला।

मनक शांति आ सबल बनय तन
सुइयो हितकर होइए
मधुर सनक बोलो तँ कौखन
कष्टोकेँ नोतैए।

उचित बात अनुचित जँ लागय
बुझब विनाशक बेला
सदिखन करय प्रशंसे क्यो तँ
छुपल ओहिमे खेला।

हिन्दुस्तानक प्राण तिरंगा

टपकय जा धरि अइ धरतीपर चन्द्रमाक शीतलता
सगरो पसरय सूर्य-किरणसँ सक्रियता–उज्ज्वलता
सन्तति भारत माँक गर्वसँ कहय–‘हमर मन गंगा’
ताधरि हिन्दुस्तानक घर-घर फहरय विजय तिरंगा ।

जा धरि जल-थल-नभक महत्ता जीवन हेतु जरूरी
साँसक लेल हवाक प्रयोजन , सिहकय बिनु मजबूरी
भारत माँ केर चरण पखारय जलधि–नदीक तरंगा
ताधरि हिन्दुस्तानक घर-घर फहरय विजय तिरंगा ।

मान तिरंगा , शान तिरंगा , दूबि-धान भगवान तिरंगा
ज्ञान तिरंगा , शौर्य तिरंगा , सत्यक ई सम्मान तिरंगा
भारत माँ केर वीर सपूतक बलिदानक वरदान तिरंगा
घर-घर फहरय , नभमे गूँजय , हिन्दुस्तानक प्राण तिरंगा।

उर्वर धरती

उपजय से थिक उर्वर धरती
जतय न उपजा हो , से परती

परतीओपर जाय खेलाइ
लक्ष्य हमर 'ओलंपिक' आइ
उपजय से थिक उर्वर धरती
जतय न उपजा हो से परती

परतीओपर कविक कलम
चलय तँ हो ओहो गमगम
उपजय से थिक उर्वर धरती
जतय न उपजा हो , से परती

परतीपर सेहो करखाना
थीक विकासक वैह खजाना
ओकरो मानी उर्वर धरती
बुझी न ओकरा कथमपि परती ।।

भाग्यक रेखा

काल पात्र तँ स्थिर नहि रहइछ
जहिना कलकल धारा
पात्र कालकेँ जे चिन्हि चलइछ
ओकरहि जग विस्तारा।

रुचि–शुचि–संयम– अनुशासन लखि
ब्रह्मा लीखथि लेखा
सफल सकल सेवा–फल भेटइ
अमिटे भाग्यक रेखा।

ऋतु-परिवर्तन

अतत्तह गरमी बहबय घाम
जाड़ सेहो तहिना बदनाम
करैए वर्षो ऋतु पिचपिच
तखन की ऋतु जाय नानीगाम ?

गरम-शीत-भीजब जिनगीमे
अति आवश्यक प्रकृति बुझाबय
पोखरि–पंथ-पहाड़ो-जंगल
हेलब-चलबो-चढ़ब सिखाबय।

जहिना सुख-दुख जीवन आबय
ऋतुओ तहिना रूप देखाबय
ऋतु-परिवर्तन सहज प्रक्रिया
जिनगी जीबक पाठ पढ़ाबय।

अइ जंगलमे

जंगल मनमे , जीवन वनमे ,
चहकल चिड़िया , कुहकल कोइली ,
सिहरन तनमे । अइ जंगलमे... ॥

कलकल धारा , भलभल सारा ,
बाघ-सिंह , जोरे चिग्घारा ,
गूँजय नभमे । अइ जंगलमे... ॥

झरना झर-झर , बहइछ निर्झर ,
लय संगीतक , सस्वर गीतक ,
विलसय घनमे । अइ जंगलमे... ॥

प्रकृति निहारय , प्रेमक आलय ,
मन देवालय , पूजन-अर्चन ,
अरपन छनमे । अइ जंगलमे... ॥

कतौ न कटुता , सभमे पटुता
धन-बल दूरे , जीवन पूरे ,
मन मंगलमे । अइ जंगलमे... ॥

चुनि ली अप्पन ‘रोल’

ककरो बटर पनीर मसाला , ककरो कबकब ओल ।
ककरो शांति स्वभाव पसिन तँ ककरो लबलब लोल ।।
ककरो झाँपन नीक न लागय , ककरो दाबल खोल ।
बाँसुरीक सुर ककरो भावय , ककरो ढबढब ढोल ।।

ककरो अनकर टेटर सूझय , ककरो अप्पन गोल ।
ककरो पूनम चान तँ ककरो गुज्ज अन्हारे टोल ।।
ककरो चुबइछ लेर-ढेर तँ ककरो मन सन्तोष ।
ककरो रकटल प्राण मान ले’ तँ ककरो ले’ रोष ।।

ककरो चिक्कन चुनमुन आङन , ककरो भरले झोल ।
ककरो कचरमकूट भोजनक , कतहु उपासल भोर ।।
ककरो मनमे धनक पिपासा , कोनो आँखिमे नोर ।
ककरो न्यायक भरल तराजू , कतहु अनीति-अङोर ।।

ककरो गायन कानक कटु तँ ककरो बोल अमोल ।
ककरो काज बढ़ै अछि चुपचुप , तँ ककरो अनघोल ।।
मनुखक दुहू प्रकार होइत अछि , चुनि ली अप्पन 'रोल' ।
यश-अपयश दुनू बजबैए , कोन पसिन अछि टोल ।।

मिथिला हो सर्वोत्तम धाम

सहलनि सीता दुख त्रेतेसँ
आब न कनियोँ बहतनि नोर ।
वैदेही-जानकी-मैथिली
सिया सीबि नहि रखती ठोर ॥

दुष्ट रावणक सभ दल-बलकेँ
अपनेसँ करती संहार ।
छल-बलसँ जे आँखि उठौतनि
पठा देती यमलोकक द्वार ॥

पढ़ती-लिखती आगाँ बढ़ती
शतप्रतिशत ई मिथिला-नारि ।
ज्ञान-कला कौशल-विज्ञानक
छटा देती सभ ठाम पसारि ॥

शक्तिस्वरूपा सीता-कारण
पुरुषोत्तम कहबौलनि राम ।
तहिना आजुक बाला सोचथु
मिथिला हो सर्वोत्तम धाम ॥

बृक्षारोपण

दोषारोपणसँ नीक
बृक्षारोपण

ओ
कुटिल जीवनक संरक्षणक संग
वैमनस्यकेँ बढ़बैछ
आ ई
हरित-भरित जीवनक
सार्थकता प्रदान करैछ

ओ
जीवनक मूल्यकेँ घटबैछ
आ ई
जीवनक मूल्यकेँ बढ़बैछ।

ओ वातावरणकेँ
हकारि
विषमय-दूषित करैछ
आ ई
विषमय वातावरणकेँ
टारि
अमृतमय बनबैछ।

क्षणिका

01

अन्तिम बेंचपरक चटियोपर ,
असली गुरुए राखथि ध्यान ।
टोकि , ठोकि , थपथपा पीठ पुनि
आगाँ आनि बढ़ाबथि ज्ञान ।।

02

हृदय–प्रवाहित अक्षर-माला ,
सुन्दर काव्य जेना बनि जाय ।
तहिना गुरुक शरणमे शिष्यो ,
चमकि जाय विद्वान कहाय ।।

03

कर्म धर्म थिक , धर्म कर्म थिक ,
जे जन बूझै छथि ई मर्म ।
अपनहि टा नहि , सकल समाजक ,
संग चलब बूझथि सत्कर्म ।।

04

योग तथा संगीत दू
पहिया थिक गाड़ीक ।
तन-मनकेँ रखने रहय
सबल देहधारीक ।।

05

जड़िमे देने पानि जनि
फुनगी धरि चलि जाय ।
कविता सीटल रहय तँ
मन-मस्तिष्क समाय ।।

06

रस बिनु मधुर थिकै बस गुल्ला ,
मुस्की बिनु जन थिक मुँहफुल्ला ।
जतय उसट्ठ जनक हो वासा ,
ततय उदासी करय निवासा ।।

07

सकल प्रतिद्वंद्विक दुइए गति
होइछ–जीत वा हारि ।
तखन किए अपनामे सोची
करबा लेल अरारि ?

08

एको बेर जँ चुकलौँ बौआ ,
बुझु विजयक थिक अन्त ।
रहय प्रयास निरन्तर जारी ,
लक्ष्य सिद्धि पर्यन्त ।।

09

बेटीकेँ बेटा ओ बेटाकेँ शेर बुझब ,
बन्द करू आब कहब , समयो से गेल ।
कोन क्षेत्र आब कहू बाँचल प्रवेश बिना ,
जाहि ठाम बेटी नहि , बेटे टा गेल ।।

दोहा

दैव देल धन-मान्यता , शौर्य-पराक्रम-शान ।
घटत जखन तकदीर तँ , अपनहुँ होयत आन ।।01।।

सबलो भीष्म पितामहो , अबल भेला असहाय ।
हुनकहि सम्मुख द्रौपदी , भेलि रहथि निरुपाय ।।02।।

जीत-हारि तँ नियति अछि , जोड़ी होइछ समान ।
जीतत तँ एके गोटा , तखन कोन अपमान? ।।03।।

एक बेर हूसब न थिक , सदा लेल हो अन्त ।
हारि दैछ ओ प्रेरणा , बनब अहूँ श्रीमन्त ।।04।।

अपने रही अन्हारमे , आनक लेल इजोत ।
जकर भावना दीप सन , वैह प्रेरणास्रोत ।।05।।

जाति बनल अछि जन्मसँ , कर्मक पूजा होइछ ।
ज्योति न रहितो आँखिमे , 'सूरदास' देखबैछ ।।06।।

कत पंडित दंडित भेला , भेल हुनक घर जेल ।
नियम-उपनियम-परिनियम , अम्बेदकरक देल ।।07।।

एक रंग सम्पत्ति तँ , पिता पुत्रकेँ दैछ ।
जइमे एक 'मुकेश' आ , दोसर 'अनिल' बनैछ ।।08।।

जगह–जमीनक झगड़मे , अपनहुँ खून बहैछ ।
शिक्षा-शिक्षण-शास्त्रमे , अनकहु ज्ञान बढ़ैछ ।।09।।

दान दैछ प्रतिदान हित , जे से छोट कहौत ।
बिना स्वार्थ किछुओ दिअय , सैह पैघ कहबौत ।।10।।

आन रहौ , सम्बन्धि क्यो , अथवा अप्पन लोक ।
आशा राखब तनिक जँ , होयत तखने शोक ।।11।।

बिनु सहयोगेँ परस्पर , बढ़ब समाजक छै कठिन ।
दुख-सुखमे जँ संग छी , हैत तखन बामो दहिन ।।12।।

फुलबाड़ी

बाग , बगीचा , उपवन ओ बाटिका तथा उद्यान ,
बाड़ी-फुलबाड़ी सभ एक्के थिक , नहि कोनो आन ।
अपनहि हाथेँ रंग-विरंगक फूलक गाछ लगाबी ,
गद्दा सन मखमली दूबि , चलि आँखिक ज्योति बढ़ाबी ।।

जखन-जखन मन असोथकित सन , आ थाकल तन लागय ,
फुलबाड़ी चल जाइ–उदासी , थाकनि अपनहि भागय ।
गम-गम गमकै रंग–विरंगक फूल , हवा अगराइ ,
जँ खेलाइ नित भोर–साँझ , नहि कहियो खाइ दबाइ ।।

चन्द्रमाक नाम

इंदु-कलानिधि-विधु-शशी , उड़प-मयंक-शशांक ।
चाँद-चन्द्र-राकेश आ , कुमुद-हिमांशु–मृगांक ।।
तारापति-राकापति आ द्विजराज-निशापति-हिमकर ।
तारकेश-ग्रहराज-विभाकर-दोषाकर आ विधुकर ।।

चन्ना-चन्दामामा आ सारंग-कलाधर-सोम ।
अमृतरश्मि–शुभ्रांशु–निशाकर आ सुधांशु-घर व्योम ।।
चन्द्रमाक पर्याय अनेको आर छैक , ता एतबो जानू ।
जँ-जँ बढ़बै-पढ़बै , तावत् रटि ली एकरा , ततबो मानू ।।

कमलक नाम

पंकज-पुष्कर–पुण्डरीक ओ पारिजात-पाथोज ,
जलज-वनज-उत्पल-कुवलय आ पंकरूह-अंबोज ।
शतदल–उत्पल-कंज-पद्म पुनि नलिन और अम्भोज ,
सरसिज-सरसीरुह-सरोरुह ओ वारिज सहित सरोज ॥

अम्बुज-अर्णज-अब्ज अरु , इन्दीवर-शतपत्र ,
कँवल-तामरस-कोकनद , किंजल्कहु सर्वत्र ।
कमल फूल पर्याय अनेको बौआ ताबत एतबो जानी ,
जँ-जँ-बढ़बें तँ-तँ पढ़बें ,रटि ली एकरा , कहबी ज्ञानी ॥

जिनगीक लेल वरदान

(बसातक नाम)

वायु-प्रकंपन-आवहवा ओ तान–समीरन–व्याप्ति
समी-प्रभंजन– अनिल–हवा , पुनि वात–वयारो-वाति
वातावरण-प्रवात–चलन आ प्राणवायु–पवमान
मरुत– समीर-पवन– मारुत थिक जिनगीक लेल वरदान ।

(वयारो=वयार)

लिखल मैथिली नीक लगइए

लिखल मैथिली नीक लगइए
सभ टा हमरा ठीक लगइए
सुन्दर रचना हृदय जुड़ाबय
तेँ कहैत छी मीठ लगइए ।

हमरा नहि लीख'अबैत अछि
अनके रचना बड़ सोहाइए
हो पुरान वा नव साहित्यो
पढ़ि–पढ़ि आनन्दे बुझाइए ।।